

प्र० ८५५

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

ग्रंथ नाम

विषय

कथा-पुराण.



५६६

१२८

(१)

श्रीगणेशायनमाः॥ किराटपर्वजस्थायजाठप्रारंभा॥
 जोवंधेबोलिजेकाश्रेष्ठिः॥ जोबैसोनिमायदेवि
 व्यापारिः॥ ब्रह्माविष्णुमहेश्वरपोर्ति॥ साठविलि
 वाढके॥१॥ कीदुकेंवा नयनावे॥ रंजविसा
 कारनेचिनिभांवे॥ उत्कपालश्यास्तभावे॥
 थापठेनियापहुडवि॥२॥ नया जाह्निपूरुषा
 रवामि॥ लिक्काविश्वांभरगुरुनामि॥ नमस्का

(१)

विष्णु ॥ रोनिसनाधर्मि ॥ सावधत्वंणेश्वो न या ॥ ३ ॥ अध्या
 त्तु ॥ जाताचोथेविराटपर्वा ॥ नवरसरुधेचास्त्
 धार्णव ॥ श्रवणद्विद्याचेमवे ॥ अति अे
 भिं नवनवदे ॥ ४ ॥ लंभारेकोनिके गग
 नि ॥ ठावन काढके सहज जिवनि ॥ विश्वां
 भरने यथसदनि ॥ हशाणश्वानपिधेना ॥
 ॥ ५ ॥ मुढ अंस कबोलतिवचने ॥ तेमठ

(2A)

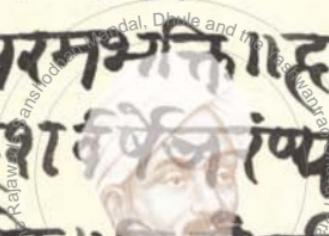
रनेणते पणे ॥ सुण ग्राहिक जिव प्राण ॥ त्रेस
 करिनि यात्रथा ॥ छु ब्रया गृजान् विच्या
 निरा ॥ काच कुपि काभरो निचनुरा ॥ काव
 डि नेतिग मे श्वरा ॥ अभे कार्थं जावडि ॥
 ७ ॥ ते विवेदाल्यम् युग्मे देरवा ॥ व्यासे का
 ठिले अस्तु गोदका ॥ महाता स्पष्टाद्वचिया
 कुपि का ॥ भरो निधा डिल्या मजहाति ॥ ८ ॥

(3)

४१

वसादपाढवित्तपिती॥तोश्चीकरोनिश्चो अ०
 ति॥कर्णद्वारापरमभक्ति॥हृदयलीगायि
 चेष्टे॥१॥द्वादशावर्षजंप्यवासे॥सरत्या
 नंतरेकुरुनरेष्टा॥ २॥ हृष्टिगुणविशेषा।
 विच्चारविवरीहेका॥१॥न्योधेबंधुजा
 णिहोपदि॥धोम्यविवेकाचारुदधी॥
 त्यातेल्पणविशाक्तुरुद्धि॥बुधीप्रद

उ५



(3A)

मनहोय ॥३३॥ न स्वर्य ज्ञेतवास ॥
कोणा गई कर्मा वे कैसे ॥ शानुशि कबलि
याविषेष ॥ महं सन पाडतिल ॥३३॥ ज
सि आळमाळ पडे राका । तपिवारा क्रमोनि
ते रावे ॥ जो से कमि तकरित प्रावे ॥ आयु
ष्य गेले सात क्ल ॥३३॥ धी म्यत्प्रणतिवि

(४)

वि० चारसुमति ॥ कासयाभ्यसिन्विता ॥ वृ ज्
ति ॥ होणारशाद्यगति ॥ जापेजापेहो
तसे ॥ ३४ ॥ यद्याचियवरशाषि ॥ स्वपेपाल
टति आपेशि ॥ न मंजोणति केशि ॥ तेहि
ओकनरेंद्रा ॥ ३५ ॥ क कनामठेविजेधर्मा ॥
बद्रव अभिघानहभिसा ॥ येओनिजां
गनेविप्रतिमा ॥ बहुनष्ठाजर्जुना ॥ ३६ ॥

३

(HA)

ग्रथीकनामहेनकुबाते॥ तंतिपाष्ठहेसहदेवा
 तेपर्सेरंथिद्वोपदिते॥ कवृकनामहेपाचारा॥
 १७॥ धर्मराजयाचेयारा॥ होतोनियोगजधि
 कारी॥ जेसेबोलो॥ रातनगरि॥ विराटा
 तेशोविजे॥ १८॥ पलाटल्याजज्ञातसंवल्सरा॥
 पुटेकराजनेकविच्यारा॥ राज्यप्राप्तिचाप्र
 कार॥ साध्यासाध्येजाणवि॥ १९॥

(5)

ऐसेथोम्पजनुवादता॥परमसंतोषकृतिसु अ०
 १० ता॥ब्राह्मणसंगीयसत्स्ना॥जाज्ञादेवो
 ४ निपाठवि॥२०॥कोणिष्ठो व्यालदेशकर्ती॥को
 णिसत्यमपुत्रिप्रति॥कछकसुदेवसंगति॥
 वर्षयेककमावे॥२३॥कोणिधारिलेहस्तना
 पुका॥रवेदजाल्कादको रवेश्वरा॥ज्ञात
 वासयुधिष्ठिर्॥कोठेकेसेनेणवे॥२३॥

५A

इद्दसेनरथेसहित ॥ सेवकसेहिरेपर
मआत् ॥ द्वारकेथाडिलि कृष्णनाथे ॥ अंगे
हभावेपाक्षित ॥ २३ ॥ द्रोपदिच्चियापरिचारि
का ॥ सर्वीयावेशाजनेका ॥ हृषुक
द्रोपदेवोनीसुखवा ॥ अंगे हभावेपाक्षि
त् ॥ २४ ॥ अग्निहोत्रिसामेग्निसि ॥ धीम्य

(6)

वि० जाता पांचाक्षिः ॥ नितसांगेपांडवाशि ॥ वि भ०
 राटसंगीवसाव्या ॥ २५ ॥ नामरूपेथोरपा ९
 ५ ॥ कोणहोवोनिहोवेज्ञानादिनाहुनीपरमदिन ॥
 औसेलोकाद्वावाहे ॥ तु उनिचानुर्युक्ताक्तेह ॥
 मूर्खतनाणिजेब्रह्मत ॥ समर्थबोलिलेजेनप
 इरहे ॥ तेचिशाह्वजनुहा ॥ २७ ॥ असत्यनबोहि
 जेसर्वथा ॥ धर्मजेनिर्मङ्गनिलोभरा ॥ २८

६A

द्वियनेयमेनिश्चकरा॥तो होयवहुभरायाते॥३८॥
राजाजानाठकार्यसांगे॥नकरवेलणेनिनहि
जेमागे॥स्वभावेजो छरो लिजो वागे॥तो चि
वहुभरायाते॥३९॥ सामासेजंतः पुनि पुठाढो
केरणचत्वारि॥दि ल अशा वंदनिश्चिदि॥तो
चिवहुभरायाते॥३०॥ किजे सर्वा सिजुर्जव॥
कोटेन्हारववाहावक्रभाव॥सर्वा पासो निर्गोर
व॥ तो चिपावे निर्धादि॥३१॥ करणिकरो

(७)

निषालपवि॥ महिमा द्वजयान्त्रिवा दृष्टि॥ महायशा अ०
वि० चितोपदवि॥ जापेजापेपावतु॥ ३३। रायेनिमि
लेब्यापानि॥ सा रव्यानजंतुरात्रि॥ जाहेशानि
द्वा दवडोनिलुनि॥ तो न्त्रिवृद्धमरायाते॥ ३३। रो
जरियाशिसंवाह॥ सुजापुमि हितेमि द्वा
पुत्रामित्राशिविना॥ राजपुरुषे रोहितेशि
वाह॥ जाणते पुरुषेशिमकरावा॥ ३४॥ जाहि
यामानले अवमान॥ हर्षविष्णादि नदा

७८

लिमन॥६८माशि छ सु प्रसंन॥ तो नि पा वे म
 हि मे ई ते॥ ३५॥ रा ज्यौ शु न्यना य के का नि॥ रा
 ज नी हा न बो ले वद नि॥ रा ज मां न्या रु सं न्मा
 नु नि॥ तो नि मान्य रु ना ते॥ ३६॥ प्रभु बो लि
 ले विण बो लण॥ ग्रू पु से लते नि सा गंणे॥
 न पा चा रि ता ना हि जो णे॥ तरी चपा वे प्रति ला
 ॥ ३७॥ रा ज्यौ स नि रा ज वहु नि॥ रा ज या चे यं का
 त स द नि॥ वे स फा न क रि तो ष इ गुणि॥ मा न पा वे

(४)

वि०॥

६

नृपाचा ॥ ३८ ॥ आपुठेब्रगडुनेषेज्ञान ॥ नेषेसा
 अ०
 तेल्पेसज्ञान ॥ याचेसुरिवमधुरवचन ॥ तो
 चिमान्यविश्वाते ॥ ३९ ॥ असोतुल्माजाणसा
 प्रति ॥ कायबोलणे साठयुक्ति ॥ सांगि
 तलेया चिरिति ॥ लज्जा तवासक्कमावा ॥ ४० ॥
 हहइधरनिळछास्तर्ति ॥ समरणे जास्तावेजहेता
 चि ॥ त्रयीदशवूर्धाचियअति ॥ सिग्रभेडिय
 तुद्दे ॥ ४१ ॥ औसेसां गोनिकुरनरे ॥ शोधीम्य

गेत्तुपांचाक्षदेशा॥ अणेधर्तविचार्॥ कस्यापु
 ढाकरणेवंधुहो॥ पुराधर्तलणमिवदनवा
 चा॥ सभापोडित्यपांडवाचा॥ ज्ञातिब्राह्मण
 सद्विधोवा॥ संव्रह यासि मजुषाशि॥ ४४ गजा
 सातवासपरग्रहि वतित॥ उदनविरालिभवे
 णगति॥ पान्दहेलणतेप्रद्वृआर्थी॥ सके
 टकाहिअसेना॥ ४३॥ रत्नप्रिक्षामिकुश
 क्ष॥ रेवकुजापेद्युतरेव छ॥ बुद्धिकुक्तियुक्ति

(१)

वि० कुशळ॥ मज्जमानजसेना॥ ४५॥ वस्तुपरि
दृशाजनिति॥ समझायेविचारयुक्ति॥ सह अ०
जघडलियासंगति॥ जाणवलस्वभावे॥ ४६॥
बोधुनियानृपात्॥ तुसीक्रमुककठिण॥
भिमल्लणेसुप्रसंज्ञा हिकिनन्नछाते॥ ४७॥
पाककर्त्ता बहुवना मायमाद्यिमिश्रुध्यक
मर्ता॥ भक्षभो ज्यञ्ज मृतोपमा॥ निपनविनस्व
हस्ते॥ ४८॥ भिमसंगतिनिर्देष॥ अगिके

(१७)

लासेवा छाभ्यासे ॥ वोदा वोनि उत्कासे ॥ उ
 पजवि न तु जनाया ॥ ४३ ॥ जेसे बोलता चम
 कारे ॥ आंगि कनि ठेरा जश्वरे ॥ ज जुनल
 ने हुवि चारा जा सच ही परि यसा ॥ ५० ॥
 वषयि कउवेही आ ॥ ताक्षापकरा वयानी
 ह्रेविं ॥ आगि अवयु ने ओगंना वपु ॥ राज
 याते से ठण ॥ ५१ ॥ नाठकाक्षाळे चिचे कुम
 री ॥ नाव उडालो क्षाकु वारी ॥ सारथ्यवि

(10)

वि० ९ धीहैनिपरि॥ जर्जुनसांगिनाधाकि॥ ५३॥ पार्थकि
 रिनाशरसंधाने॥ नेमेनिश्चयलक्षभेदना हृषि
 पाहाताजाले जाना॥ सासद्ग्रप्रसाहे॥ ५४॥ ऐशा
 वदेनियागो छा॥ का बलमुत्तयानिकटि॥ नकुके
 ल्लणेमाल्लियगाठि॥ का बलहो त्रधनविधा॥ ५५॥
 अश्वनाचवर्णेनिगृहि॥ का रेकि रवपैच क्राकति
 ॥ शिष्रपक्षवितावातगति॥ मंद्यज्ञेसेदावणे॥ ५५
 ॥ वारुचालवणेगगनि॥ तरोनिजाणेसमुद्गजि

(10A)

वनि॥ जैसे तो जदा उन्धनि॥ भृत्य करि न राया चे
॥ ५६॥ संहरे वल्लेण द्वैशि धेनु॥ हषभद्मनि ज
ति सु जाणु॥ होहन मधनि अनि नी पुणु॥ शिष्य हो
य कृष्णाचा॥ ५७॥ कृष्ण मिसे रंगि॥ पाचाकि
चिशु शाकरि॥ विरा र्या युण सुंदरि॥ आरा
धिन सुहेला॥ ५८॥ जप्ता यास्तु नितु पाया॥ दि
वस्तु धर्मराया॥ मगस्म रोनि कृष्णाया॥ सहि
जणे चात्तिलि॥ ५९॥ पुढा चालता जग जे ठि॥ वि



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com